परमात्मा से महापरिवर्तन का नया दौर

एक ऐसे कार्य का आरंभ इस सृष्टि पर हो चुका जो मनुष्य की सोच व कल्पना से भी परे है। अगर मनुष्य ये कार्य कर लेता तो फिर परमात्मा की आवश्यकता ही क्यों रहती! हर कोई अपनी-अपनी समझ व सोच से चलता है, देखता है और कल्पना करता है। उनका दायरा इस सृष्टि में होने वाली घटनाओं व पढ़ाई के आधार तक ही सीमित रहता है। पर हम हमेशा कहते हैं कि परमात्मा का कार्य निराला है, वो पतित से पावन बनाने का कर्त्तव्य करने वाला है, जो किसी मनुष्य के वश की बात ही नहीं। ऐसे महापरिवर्तन के लिए मूल रूप से पवित्रता के ही फाउण्डेशन की ज़रूरत होती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत भूमि पर बड़े सहज व शांतिमय ढंग से महापरिवर्तन का दौर चल चुका है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस भगीरथ कार्य का बीड़ा स्वयं परमात्मा ने उठाया है। अरावली की श्रृंखला में बसे पवित्र स्थान माउण्ट आबू में परमात्मा शिव निराकार ज्योतिर्बिन्दु अपने साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर यह कार्य करवा रहे हैं। इस कार्य में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है। जैसे महात्मा बुद्ध ने कहा कि इच्छाएं ही मनुष्य के दुःख का कारण है। अनावश्यक इच्छाओं पर विजय पा लेने वाला मनुष्य ही महान कार्य में अपना सहयोग कर सकता है। आत्मा की मूलभूत और हृष्ट-पुष्ट खुराक को समझना है और उसे सतोगुणी बनाना है। इसके लिए मानवीय इच्छाएं, इन्द्रियों के असंयम के आधार से जो बनी हुई हैं उन्हें ज्ञान-योग के बल से ही नियंत्रित किया जा सकता है।

इसके लिए सबसे पहला पाठ यह समझना है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं। न सिर्फ समझने तक अपितु आत्मा के यथार्थ अस्तित्व को समझकर चलना भी है और कार्य भी करना है। उस पथ पर चलने के लिए शक्ति भी चाहिए, इसके लिए बार-बार परमात्मा से जुड़ना है। यही परमात्मा हमें कहते हैं कि तुम मेरे बच्चे हो, तुम महान हो, तुम्हारा अस्तित्व ही पवित्रता है। इसे समझकर हर पल, हर क्षण उसे प्रयोग व उपयोग में लाते रहना है। इस अनोखी जीवनशैली से ही एक नये दौर यानी आपके मनइच्छित श्रेष्ठ संसार का निर्माण होगा।

करीब नौ दशक पूर्व से स्वयं परमात्मा द्वारा यह कार्य अविरत चल रहा है। ये महापरिवर्तन का दौर चंद दिनों का ही है। हम सभी के पिता परमपिता परमात्मा निराकार शिव आपको भी यही मौका देना चाहते हैं। आओ, आपको भी ऐसी पावन दुनिया में ले चलूं जहाँ सबकुछ सहज, सरल व श्रेष्ठ होगा। आज हम जिस दौर से गुज़र रहे हैं, वहाँ इसका प्रवेश भी नहीं होगा। वहाँ सुख, शांति, समृद्धि से सम्पन्न सत्व का राज्य होगा। आप भी सूक्ष्मता और विवेक से समझ सकेंगे तो पायेंगे कि अरावली की श्रृंखला के मध्य माउण्ट आबू के पावन धरा पर यह श्रेष्ठ कार्य चल रहा है। जहाँ विश्व के लाखों लोग परमात्मा द्वारा संचालित इस पावन कार्य में अपने पवित्रतामय जीवनशैली का अमूल्य सहयोग देकर अपना भाग्य बना रहे हैं। आपकी भी तो यही चाहत है ना! तो देर किस बात की! आप भी इससे जुड़ जाइये और अमूल्य जीवन को सार्थक करिये। अभी नहीं तो कभी नहीं। क्या सोच रहे हैं! बढ़ाइये अपने कदम ज़रा इस ओर...। शुभ कार्य में देर किस बात की...!

धरा पर परमात्मा शिव की आवश्यकता क्यों?

आज मानव इतिहास पुनः एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आ पहुंचा है, जहाँ एक ओर मानव उत्थान की अनंत संभावनाएं हैं वहीं दूसरी ओर उनके समूल विनाश की पूरी तैयारी! विज्ञान और तकनीकी प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानव के हाथ का खिलौना बन गई है। उसने मानव जाति को ऐसे बारूद की ढ़ेरी पर ला खड़ा किया है जिसमें किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। प्रकृति पर विजय पाने के हर्षोल्लास में मानव इतना पागल हो गया है कि उसे स्वयं का होश ही नहीं रहा है। अपने मूल स्वभाव शांति, प्रेम, आनंद व आत्म ज्ञान से उसका सम्पर्क बिल्कुल ही टूट चुका है। सर्व भौतिक साधनों के होते भी मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है और नींद के लिए गोलियां लेनी पड़ रही हैं। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य परेशान अवश्य है परंतु वह इन प्रदूषणों को रोकने में असमर्थ है क्योंकि इन सबके पीछे जो मानव मस्तिष्क का प्रदूषण है वह बंद नहीं हो रहा है। मानव समस्याएं दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जहाँ राष्ट्रों के बीच तनाव बना हुआ है वहाँ प्रत्येक राष्ट्र के अंदर भी शासक और शासित के बीच सम्बंध ठीक नहीं हैं। अनुशासन का हर क्षेत्र में सर्वथा अभाव है। तनाव हर क्षेत्र की सामान्य बात हो गई है।

मानवता ऐसे मोड़ पर आ खड़ी है कि मानव को कुछ समझ ही नहीं आ रहा है। ये हालत हो गई है कि क्या सही क्या न सही। जैसे-तैसे बस दिन काट रहा है। इतना अमूल्य मानव जीवन यूं ही दुःख, अशांति, तनाव में व्यर्थ गंवा रहा है। क्या आपको यह नहीं लगता कि कालचक्र की सुई वहाँ आकर पहुंची है जहाँ चारों ओर अज्ञान का अंधेरा ही अंधेरा है। मानव मस्तिष्क का सूत उलझ गया है। तब तो शास्त्रगत बात हमें याद आती कि यदा यदा हि धर्मस्य...। कहीं ये वही समय तो नहीं है! जहाँ परमात्मा अवतरित होकर पुनः हमें इस अंधेरे से प्रकाश की ओर ले चलने के लिए आया हो! आ भी गया है तो उसे जानना भी ज़रूरी है। जब जानेंगे तब तो उससे सम्बंध जोड़ेंगे और हमारी खोई हुई तकदीर जागेगी। कहीं न कहीं वे परम कृपालु परमपिता परमेश्वर अवश्य ही पूरी मानव जाति अज्ञान अंधकार से मुक्त कर प्रकाश की ओर ले जाने का कर्त्तव्य कर रहे होंगे। हम आपको ये बता रहे हैं कि शिवरात्रि का त्योहार उसी के रूप में मनाते हैं क्योंकि रात्रि अंधकार का प्रतीक है। रात्रि में ही हमें प्रकाश की ज़रूरत होती है। वो अभी धरा पर आये हुए हैं और उनकी नितांत आवश्यकता भी हम सबको महसूस हो रही है। अब शास्त्रों की बातों की थोथी विद्वता को छोड़कर अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचें और उस भाग्यविधाता परमात्मा शिव से रिश्ता जोड़ लें। यह श्रेष्ठ अवसर हमारे हाथ से

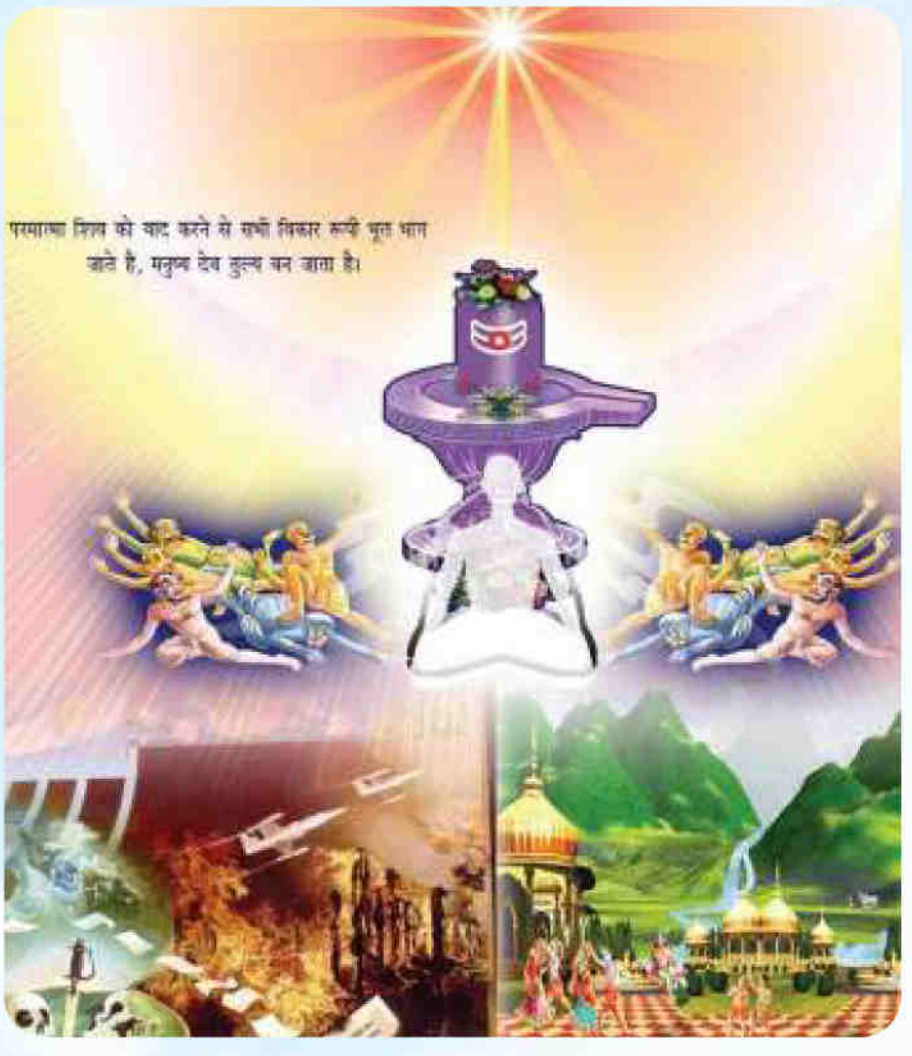

छूट न जाये, नहीं तो सिवाय पछतावे के और कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। तो जागो और अपने परमपिता शिव परमात्मा से नाता जोड़ अपना अधिकारिक वर्सा लो।